क्ले आर्ट

चेतन पाटली



यदि हम औपचारिक भारतीय स्कूली शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में स्वयं से यह सवाल पूछें कि हम प्रमुख विषयों पर ज़्यादा ध्यान देते हैं या सह-पाठ्यचर्या वाले क्षेत्रों पर। तो इसका सीधा-सा जवाब होगा प्रमुख विषयों पर, जबकि सह-पाठ्यचर्या के क्षेत्रों में हम सतही तौर पर कार्य करते हैं। लेकिन यह सह-पाठ्यचर्या के विषय भी बच्चे के समग्र विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस सन्दर्भ में, कला सह-पाठ्यचर्या का एक ऐसा क्षेत्र है जिसे स्कूल में प्रमुख विषयों के साथ-साथ सुदृढ़ करने और व्यवहार में लाए जाने की आवश्यकता है। साथ ही इसके लिए संरचित पाठ्यचर्या, डिज़ाइन और योजना तैयार करने की भी आवश्यकता है। अपनी भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं को विभिन्न माध्यमों मसलन चित्रकला, पेंटिंग, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य, नाटक आदि के द्वारा व्यक्त करने के लिए कला एक प्रभावी साधन है।

विगत चार वर्षों से हमारे स्कूल में कला के विभिन्न रूपों को व्यवहार में लाया जा रहा है और इसके लिए बाक़ायदा हमारे स्कूल की समय-सारणी के अन्तर्गत समय भी प्रदान किया गया है। हालाँकि 2016-2017 के शैक्षिक वर्ष में हम सभी शिक्षकों ने महसूस किया कि हमें कला के किसी एक रूप को बुनियादी स्तर से लेकर अगले स्तर तक आजमाना चाहिए। हम सभी ने एक साथ बैठकर इस बारे में विमर्श किया कि हम कला के किस रूप को आजमा सकते हैं और नए सिरे से उसे व्यवहार में ला सकते हैं। इस विमर्श में दो विचार प्रमुख रूप से उभरकर आए। एक बढ़ईगिरी का और दूसरा क्ले मॉडलिंग का। शिक्षण में सहायता के लिए स्रोत व्यक्तियों व संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर हमने क्ले मॉडलिंग का चयन किया।

उस समय तक मैं प्रमुख विषयों और कला पाठ्यक्रम के कुछ हिस्सों मसलन चित्रकला और पेंटिंग के साथ मुख्य रूप से कार्य कर रहा था। हालाँकि कला शिक्षण की कोई योग्यता या अनुभव मेरे पास नहीं था लेकिन मेरी दिलचस्पी थी इसमें।

कला क्या है और शिक्षा में इसकी क्या भूमिका है, क्ले मॉडलिंग क्या है और इसे कक्षा में किस तरह पढ़ाया जा सकता है आदि के बारे में अपने ज्ञान व समझ को बढ़ाने के लिए मैंने कला के नए पाठ्यक्रम पर कार्य करना शुरू किया। फिर मैंने एक ऐसी समयसारिणी - जिसमें मेरी कला की कक्षाएँ जिनमें मैं क्ले मॉडलिंग की गतिविधियों, प्रकारों और उनकी आवृत्ति को शामिल कर सकूँ, की योजना बनाई।

वास्तविक कक्षाएँ शुरू करने से पहले हमें प्रक्रिया के लिए उचित प्रकार की मिट्टी की आवश्यकता थी। तो अपनी अन्य तैयारियों के साथ ही, मैंने नइकल के स्थानीय कुम्हार हनमन्तप्पा से मिट्टी के प्रकार, उसकी उपलब्धता, क्ले कैसे तैयार करें व अन्य सम्बन्धित तथ्यों के बारे में बातचीत की। उन्होंने हमें यादगीर के निकट मुद्रल गाँव से मिट्टी लाने का सुझाव दिया। तब हमने मिट्टी को एकत्र करने के लिए बतौर स्कूल मुद्रल पंचायत के सदस्यों से सम्पर्क किया और हमें मिट्टी लेने के लिए आवश्यकता अनुमति मिल गई। इसके बाद पहली कक्षा फ़ील्ड विजिट के रूप में व्यवस्थित की गई जिसमें मिट्टी को एकत्र करने की योजना बनाई गई व बच्चों के साथ विजिट के उद्देश्य और इस दौरान बरती जाने वाली सावधानियों पर चर्चा की गई। फ़ील्ड विजिट का उद्देश्य बच्चों को यह समझाना था कि सभी मिट्टी मॉडलिंग के लिए उपयुक्त नहीं होतीं और इसलिए इनसे वस्तुएँ निर्मित करना इतना आसान नहीं होता।

तयशुदा दिन कक्षा पाँच के सभी बच्चे तीन शिक्षकों के साथ मिट्टी एकत्र करने मुद्रल गए। हालाँकि जो कुम्हार इस प्रक्रिया में हमारी मदद करने के लिए आने को सहमत हुए थे कुछ व्यक्तिगत कारणों की वजह से वह नहीं आ सके। तो मैंने उनके दिए निर्देशों के अनुसार क्ले तैयार करना शुरू कर दिया। मिट्टी को बच्चों ने तार की जाली से साफ किया और फिर एक विशिष्ट मात्रा में पानी मिलाकर उसे मॉडलिंग के लिए तैयार किया। दो-तीन दिनों के बाद मिट्टी मॉडलिंग के लिए तैयार हो गई थी।

फिर हमने चीज़ें बनाना शुरू किया। हमारे सामने विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ आईं और हमने उनके बारे में कक्षा में बच्चों के साथ विमर्श किया तो कई विचार सामने आए। इस सबके बाद बच्चों ने और मैंने हमारे द्वारा अपनाए गए तरीक़ों पर चर्चा की। उनकी कुछ प्रतिक्रियाएँ इस प्रकार हैं :

1. *'जब हम चौथी कक्षा में थे हमने कभी मिट्टी के साथ काम नहीं किया था तो जब हम मिट्टी एकत्र करने जा रहे थे मैं थोड़ा दुविधाग्रस्त था कि हम यह कैसे करने वाले हैं। लेकिन धीरे-धीरे जब हमने कार्य करना शुरू किया तो मुझ में इसे करने का विश्वास आ गया।'*

2. मिट्टी के काम को शुरू करने के पहले हम सिर्फ चित्रकारी, पेंटिंग और कक्षा के अन्दर किए जाने वाले क्राफ्ट के कुछ काम कर रहे थे जिन्हें करना अब उबाऊ होने लगा था। लेकिन कक्षा के बाहर किए जाने वाले इस काम से हमें ख़ुशी मिली और हमने अपने काम को पुस्तकालय में प्रदर्शित भी किया।'

3. 'मिट्टी के साथ काम करने के शुरुआती दिनों में मैं कोई भी चीज़ बनाने में असमर्थ था। उस समय मैं शान्त होकर बैठ गया और मैंने कई चीज़ों के बारे में सोचा। फिर मैंने मिट्टी से उन्हें बनाने का प्रयास किया तो वो काफ़ी अच्छे-से बन गईं।'

4. 'इस काम को करके मुझे बहुत ख़ुशी हुई क्योंकि हमने उस पूरी प्रक्रिया को करके देखा जिससे कुम्हार अपना काम करते हैं। और इस तरह हमने भी वही परिश्रम किया जो कुम्हार करते हैं।'

5. 'अब तक हमने केवल आसान-सी चीज़ें बनाई हैं, यदि हमें कुम्हार का सहयोग मिल पाता तो हम कई और चीज़ें बना सकते थे।'

एक सहायक के तौर पर मेरी सामने आने वाली चुनौतियाँ व इस दौरान मैंने जो भी सीखा वह निम्नानुसार है:

1. स्रोत व्यक्ति (कुम्हार) की अनुपलब्धता के कारण कार्य प्रारम्भ करने में देरी हुई।
2. मिट्टी के गाढ़ेपन को बनाए रखना एक चुनौती थी। कभी मिट्टी बहुत गीली हो जाती तो कभी एकदम सूख जाती।
3. मेरे मन में यह सवाल था कि हम किस प्रकार की चीज़ें निर्मित कर सकते हैं।
4. जब मैंने चीज़ों के निर्माण के लिए बच्चों को विषय दिए तो मुझे इस बात की चिन्ता थी कि बच्चे किस प्रकार की कल्पनाएँ करेंगे व उसे किस तरह अभिव्यक्त करेंगे।
5. और अधिक प्रभावी ढंग से इसका अभ्यास करने के लिए हमें विशेषज्ञ की सहायता की आवश्यकता है।

इस दौरान मैंने कई महत्त्वपूर्ण बातें सीखीं। इस बारे में मेरी कुछ टिप्पणियाँ इस प्रकार हैं :

1. इस प्रक्रिया ने मुझे मिट्टी तैयार करने के तरीक़ों की पहचान करने, विषय चुनने, चीज़ों को निर्मित करने के विभिन्न तरीक़े खोजने के लिए प्रेरित किया।
2. बच्चों ने अपने विचारों को त्रिविमीय रूपों में व्यक्त किया जबकि इसके पहले तक हम अपने को केवल द्विविमीय रूपों में अभिव्यक्त करने की कोशिश कर रहे थे। और बच्चों ने यह कार्य बहुत ही अच्छे-से किया।
3. वस्तुओं को निर्मित करने के लिए विचारों व जानकारियों को एकत्र करने में प्रत्येक बच्चा शामिल था जिसके परिणामस्वरूप मिल-जुलकर कार्य किया गया।
4. बच्चे अपनी बनाई वस्तुओं व बनाने की प्रक्रिया को अपनाने लगे थे जिसकी वजह से उनमें जवाबदेही नज़र आ रही थी। हम बच्चों में प्रक्रिया को लेकर स्वामित्व का भाव देख पा रहे थे।
5. कुछ बच्चे अपनी बनाई चीज़ों से कहानियाँ बुन रहे थे।
6. बच्चे एक-दूसरे के कार्य की प्रशंसा करने में समर्थ थे।
7. जो बच्चे अभी तक चित्र बनाने या रंग भरने में हिचकते थे वे भी अपने हाथों से चीज़ें बनाने में दिलचस्पी दिखा रहे थे।
8. बच्चों की भागीदारी संतोषजनक थी।
9. बतौर सहायक इस कार्य के दौरान मैं कला के नए क्षेत्र को समझ पाया और इस नए रूप के बारे में कुछ नई योजनाएँ बनाने में समर्थ हो पाया।

पूरी प्रक्रिया के दौरान हमारा उद्देश्य था - स्थिरता के साथ सभी बच्चों को कला के एक नए रूप में शामिल करना व



उससे अवगत कराना। इस प्रक्रिया में हमारा प्रमुख सिद्धान्त सोच-विचार करना व उसे अभिव्यक्त करना था न कि अन्तिम उत्पाद। मैंने यह भी बताया व सुनिश्चित किया कि प्रक्रिया के दौरान अच्छा या बुरा या किसी भी और तरह की कोई तुलना नहीं होगी।

हमें कला को सभी विषयों के अनिवार्य अंग के तौर पर देखना होगा। विषयों के अन्तर्गत भी कला के विभिन्न रूपों को इस्तेमाल करने की काफी गुंजाइश होती है। इससे हमें कला की कक्षाओं के अतिरिक्त भी कला कौशलों को विकसित करने में मदद मिलेगी। तो, इस प्रकार क्ले मॉडलिंग की यह यात्रा एक साल के लिए क्रियान्वित की गई। मैं इस योजना का व मेरा समर्थन करने, संसाधनों को जुटाने व वीडियो दस्तावेज़ीकरण करने में मदद करने के लिए अज़ीम प्रेमजी विद्यालय, यादगीर के प्रधानाध्यापक व अपने सहकर्मियों का आभार व्यक्त करना चाहूँगा।



चेतन पाटली वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी विद्यालय यादगीर, कर्नाटक में बतौर शिक्षक कार्यरत हैं। उनसे chetan.patali@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** कविता तिवारी